प्रथम अध्याय

'डॉ. देवेश ठाकुर : "व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

: प्रथम अध्याय :

डॉ.देवेश ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

किसी सृजनात्मक कलाकृति के अध्ययन के लिए उस रचनाकार के व्यक्तित्व तथा कृतित्व की पहचान आवश्यक है। मानव जीवन की उपलब्धियों में व्यक्तित्व का प्रमुख योग होता है और व्यक्तित्व जीवन से अनुभूतिपूर्ण सामग्री लेकर फलता-फूलता है। इस प्रकार व्यक्तित्व और जीवन दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। कोई व्यक्ति जन्म से ही प्रतिभाशाली होते हैं, जो अपनी प्रतिभा को क्रियाशील बनाकर महान बन जाते हैं और कोई अपने जीवन की अनुभूतियों को अर्जित करते-करते महान बन जाते हैं। दोनों का भी अपने जीवन के प्रति दृष्टिकोण उदात्त रहता है और उदात्त जीवन और व्यक्तित्व का यह घनिष्ठ बन्धन साहित्य जगत् में तो स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। ग्रीक विद्वान लोंजाइनस ने कहा है "साहित्यकार के आत्मतत्व की महानता का प्रतिबिम्ब ही साहित्य का औदात्त है।" कोई भी कलाकार अपने समय की परिस्थितियाँ एवं यर्थाथ से प्रेरित होकर ही उत्कृष्ठ साहित्य का सृजन करता है। अतः साहित्यिक कला कृति के वस्तुपरक मुल्यांकन के लिए उसकी परिस्थितियाँ अनुभवों,प्रेरणाओं और विचारों आदि का विश्लेषण आवश्यक है।

मनुष्य अपने आप को पहचान नहीं पाता वहाँ किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति के व्यक्तित्व का चित्रण करना असंभव होता है डॉ.देवेश ठाकुर के सम्यक व्यक्तित्व का परिचय प्राप्त करने के लिए शोधार्थी ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाशित अबतक के ग्रथों को आधार बनाया है। अतः "डॉ.देवेश ठाकुर जैसे सशक्त,निर्भिक, साहसी एवं रचनाधर्मी साहित्यकार के व्यक्तित्व का सही आकलन उनके कृतित्व को समझने के लिए आवश्यक है।"[१]

---

१. डॉ.पी.एस.पाटील : "देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य",पृ.१.

लेखक जीवन परिचय के अंतर्गत लेखक का जन्म शिक्षा, विवाह, पारिवारिक परिवेश, अर्थोपार्जन, प्राप्त पुरस्कार, साहित्य-सृजन आदि का विवेचन किया जाता है। इसे तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

१.१ जीवन वृत्त

१.२ व्यक्तित्व तथा

१.३ कृतित्व।

१.१ जीवन वृत्त :-

१:१:१ जन्म :-

अलमोड़ा की भूमी जितनी मनोरम, आकर्षक और हरितमा से परिपूर्ण है उतनी ही भावूक, सशक्त, संवेदनशील प्राणियों को जन्म देने में उदार है। यहाँ की भूमीपर अनेक कवि, कलाकार, साहित्यकार, उपन्यासकार आदि प्रतिभाओं ने जन्म पाकर संसार में यश प्राप्त किया है। जिनमें से देवेशजी एक है।

डॉ.देवेश ठाकुर का जन्म २३ जुलाई १९३३ ई.को उनके ननिहाल पैठ़ानी,जिल्हा अलमोड़ा (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उनका बचपन मामा के गाँव में ही बीता। पिताजी की नौकरी के कारण इनका परिवार शहर-शहर घूमता रहा। अतः रानीखेत, जोशीमठ, कर्ण-प्रयाग, श्रीनगर (गढ़वाल) चांदपुर बिजनौर, नजीबाबाद, पौडी आदि कस्बों में देवेश जी का बचपन बिता।

१:१:२ शिक्षा तथा पुरस्कार :-

देवेशजी की आरम्भिक शिक्षा पैठानी एवं नजीबाबाद में हुई। १९४९ ई.में हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद आगे की पढ़ाई के लिए वे नगीना चले गए। जहाँ उन्होंने १९५३ ई.में बी.ए. तथा १९५५ ई.में एम.ए. की शिक्षा डी.ए.वी कॉलेज देहरादून से हासिल की। एम.ए. पास होने के बाद वे बंबई चले आये और कुछ समय के लिए

प्रतिरक्षा विभाग में क्लर्क रहे। वे १९७६ ई.में सिडनहॅम कॉलेज में प्रवक्ता बन गए। प्राध्यापकी करने के साथ-साथ उन्होंने १९६१ ई.में सागर विश्वविद्यालय से पीएच.डी. तथा सन १९७१ में.डी.लिट् की उपाधि प्राप्त की। सन १९७५ में उनका डी.लिट् का शोध प्रबंध "आधुनिक हिन्दी साहित्य की मानवतावादी भूमिकाएँ" को उत्तर प्रदेश सरकार ने "तुलसी पुरस्कार" से सम्मानित किया।

१:१:३ पारिवारिक परिवेश :-

देवेशजी का जीवन बचपन से ही आर्थिक अभावों के कारण संघर्षमय रहा। १९४८ ई.में देवेशजी के पिता पुलिस की नौकरी से निवृत्त हो गये। ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण पूरे परिवार के भरण पोषण का दायित्व इनके ऊपर आ पड़ा। दो छोटे भाई तथा बहन की पढ़ाई का सारा भार इन्हें ही सम्भालना पड़ा। पुलिस में नौकरी करने की पिताजी की सलाह के बावजूद भी उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखते हुए पूरी निष्ठा से अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वाह भी किया और अपनी अध्ययनशीलता निरन्तर कायम रखी।

१:१:४ अर्थाभाव तथा नौकरी :-

अपनी पढ़ाई का खर्चा जुटाने के लिए तथा जीविकोपार्जन के लिए देवेशजी को कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा। आर्थिक संकट के इन सबसे कठिन दिनों में छोटे-मोठे कार्य भी करने पड़े। इन्होंने 'बाटा शू कम्पनी' की एक दुकान में दो महिने शू ब्वाय तक की नौकरी की है। कॉलेज के साईकिल स्टॅण्ड तथा ढ़ाबेनुमा होटल में भी काम किया, अखबार बेचे, इटों के भट्टो पर भी काम किया। गरिबी तथा अभाव को गहरी निकटता से देखते तथा झेलते हुए वे कभी निराश नहीं हुए। वे कहते हैं,- "मैं भविष्य के अच्छे दिनों की आशा में सभी मुश्किलों और अभावों को खुशी-खुशी झेलता रहा।"[१]

जब देवेशजी को महाराष्ट्र के सरकारी कॉलेजो में प्राध्यापकी के साक्षात्कार के लिए बुलावा आया तब बम्बई जाने के लिए उनके पास पैसे नहीं थे। मित्रों की मदद

---

१. डॉ.भानुदेव शुक्ल : "देवेश ठाकुर : प्रश्नों के घेरे में" - पृ.१२

से वे बम्बई पहुँचे और सौभाग्यवश उन्हें सिडनहॅम कॉलेज में प्राध्यापक की नौकरी मिल गयी। अब जीवन स्थिर होने लगा था। इतने में उनका राजकोट में स्थानांतरण हुआ। वे राजकोट तो चले गए किन्तु, वहाँ से छह महिनों बाद ही नौकरी छोडकर बम्बई चले आये। राजकोट में अपनी अद्‌भुत निर्णयशक्ति तथा संघर्ष-क्षमता का परिचय देते हुए दूसरी कोई नौकरी न होने के बावजूद भी, वे सरकारी नौकरी छोडकर फिर वापस बम्बई आये। वहाँ १९६० ई.में उनकी रामनारायण रूइया कॉलेज, बम्बई में हिन्दी प्राध्यापक के रूप में नियुक्ति हो गयी और वहाँ हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं शोध-निर्देशक के रूप में काम करते रहे। इसी कॉलेज से अगस्त १९९३ में वे सेवानिवृत्त होकर अपनी रचनाधर्मिता में कार्यरत हैं।

१:१:५ <u>विवाह तथा संतान</u> :-

देवेशजी का विवाह १२ अक्तुबर १९६१ को मेरठ में भारतीय कम्युनिष्ट पार्टीके नेता सत्यपाल डंग की बहन सुश्री सुशीलाजी के साथ हुआ। अत्यन्त सीधे-साधे ढंग से संपन्न हुआ यह विवाह-समारोह अपने आप में एक मिसाल है। इस में देवेशजी के पिता और बहन तथा उनके दो मित्रों के अतिरिक्त किसी को नहीं बुलाया था। विवाह कार्य में परम्परा निर्वाह का विचार बिल्कुल नहीं हुआ। विवाह के समय देवेशजी को पत्नी की जाति का भी पता नहीं था। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से मिलने वे जब चण्डीगढ़ गये थे तब द्विवेदीजी के पूछने पर पत्नी से ही उसकी जाति पूछकर उन्होंने द्विवेदीजी को बता दी थी। सुशीलाजी लेडी हार्डिंग्ज अस्पताल, दिल्ली में सिस्टर इन चार्ज थी। मई १९६१ में किसी मित्र ने सुशिलाजी की बात चलाई और फलस्वरूप देवेशजी को एक शालीन तथा नाम को सार्थक बनानेवाली "सुशील" पत्नी मिली जो उनके लिए सबकुछ है। उनके मित्र सुदेश कुमार कहते है,- "मैं तो यह सोचता हूँ कि आज देवेश जो भी बन पाया है, उसमें ५० प्रतिशत से अधिक भाग शीला भाभी का है। वे देवेश की पत्नी भी है, प्रेमिका भी है, दोस्त भी है, और माँ और बहिन भी है। देवेश में जो निर्द्वन्द्वता है वह शीला भाभी के कारण ही है और उन्हीं के कारण वह अपने को हमेशा भरा-भरा सा महसूस करता है और किसी भी स्थिति से टक्कर लेने को तैयार हो जाता है।"[१] उनके वैवाहिक जीवन

---

१. डॉ.ब्रम्हदेव मिश्र : "पांडुलिपि" पृ.९
(सुदेश कुमार : एक और देवेश)

के बारे में सुदेश कहते हैं कि "बीस वर्षों के वैवाहिक जीवन के बाद भी शीला भाभी और देवेश के सम्बन्धों में अभी तक बड़ी ताजगी है।"[१]

संतान के मामले में देवेशजी अपने को बड़ा ही भाग्यशाली समझते हैं। उनको दो सुन्दर सुशील कन्याएँ हैं। वे बेटा और बेटी में कोई फर्क नहीं मानते। संतान के प्रति उनके मन में मोह रहा है। वे कहते हैं "इसलिए एक अत्यन्त सुन्दर विदुषी और सम्पन्न महिला के साथ बहुत आत्मीय हो जाने के बाद भी यह मालूम होने पर कि वह मुझे संतान नहीं दे सकती मैंने विवाह के लिए अपनी असमर्थता प्रकट कर दी थी।"[२] उनकी दो बेटियाँ ही उनकी जिन्दगी है। उनकी बडी बेटी आभा एम.डी.(फिजीशियन) और डी.एन.बी. है। उसकी शादी एक मेधावी सर्जन संजय से हो चुकी है। दूसरी बेटी आरती अर्थशास्त्र में एम.ए. है और बम्बई विश्वविद्यालय से बी.ए. और एम.ए. में "रैंक होल्डर" है। वह बम्बई के एक स्थानीय कॉलेज में प्राध्यापिका है। उसका विवाह आंध्रप्रदेश के एक नवयुवक इंजिनियर वाय.प्रसाद से हो चुका है।

१:१:६ संघर्षमय जीवन :-

देवेशजी ने बचपन से ही अभावों, विषमताओं और संघर्षों को बड़ी नजदिकी से देखा है, अनुभव किया है तथा भोगा है। जीवन के कटु अनुभवों ने ही उन्हें जीने की शक्ति और प्रेरणा दी है। वे कहते हैं - "मैंने जीवन के सिध्दान्त कमरे में बैठकर नहीं गढ़े-अपने अनुभवों के निष्कर्ष को जीते हुए उनको अर्जित किया है।"[३] हिन्दु लॉज के चार सीटोंवाले कमरे से लेकर वर्सोवा स्थित कमरे के जीवन तक और फिर सायन के रूइया कॉलेज, हॉस्टल और वर्तमान में घाटकोपर के स्थायी निवास-स्थान तक उनका संघर्ष चलता रहा। "भ्रमभंग" उपन्यास में इस संघर्ष का स्वरूप विशद रूप से चित्रित हुआ है। वस्तुतः इस उपन्यास के द्वारा उन्होंने एक प्रकार से अपनी आत्मकथा ही प्रस्तुत की है जो पारिवारिक

---

१. डॉ.ब्रम्हदेव मिश्र : "पांडुलिपि" पृ.९
(सुदेश कुमार : एक और देवेश)

२. डॉ.भानुदेव शुक्ल : "देवेश ठाकुर : प्रश्नों के घेरे में" - पृ.१५

३. - वही - - वही - पृ.१४

संघर्षकथा की यथार्थ अभिव्यक्ति है। उनके जीवन संघर्ष का दस्तावेज है जो उन्हें एक अपमानित जिन्दगी के नरक सेबाहर निकलने की तीव्र आकांक्षा संघर्ष की ओर प्रेरित करती हैं।

परिवार के बडे बेटे होने के कारण देवेश पर अपने परिवार की जिम्मेदारी आ पड़ी थी। उन्होंने पिता की मृत्यु के बाद पूरे परिवार को बम्बई में अपने घर बुलाया। बहन को नौकरी दिलवा दी। उनकी पत्नी ने अपने परिवार के लिए बिना कुछ शिकायत किए नौकरी की लेकिन, अपनी बहन का "कमाऊ" होने का घमंड, उसकी स्वार्थी वृत्ति बिगडैल भाई की हरकतों तथा माँ द्वारा उनका ही पक्ष समर्थन करने की प्रवृत्ति आदि परेशानियों के कारण सन १९७० में देवेशजी को दिल का दौरा पड़ा। अतः मजबूरी से उन्हें मानसिक तनाव से मुक्ति पाने के लिए अपने परिवार से सम्बन्ध विच्छेद कर लेने का कठोर निर्णय लेना पड़ा। अब वे अपनी पत्नी तथा बेटियों के साथ शान्ति की जिन्दगी जी रहे हैं।

१:१:७ <u>साहित्य सृजन</u> :-

देवेशजी के साहित्य के बारे में सुदेश कुमार कहते है "जब वह बारहवी में पढ़ता था, तभी उसे कुछ लिखने का चस्का पडा। उसने लेखन कविता से शुरू किया और अपने लिए उपनाम "देवेश" रख लिया।"[१] सबसे पहले इन्होंने "इन्सान की मौत" नाम से एक लम्बा एकांकी लिखा और दोस्तों ने मिलकर इस को नजीबाबाद में खेला भी। उसके बाद सन १९५४ में "मयुरिका" तथा सन १९५७ में "अन्तरछाया" काव्य संग्राह प्रकाशित हुआ। इसके उपरान्त अब तक उन्होंने बाल साहित्य, ३०-३५ कहानियाँ, कई उपन्यास, १० शोध एवं समीक्षात्मक ग्रंथ, कथाक्रम १-२ एवं ७ कथावर्षों के संपादन के साथ-साथ कतिपय कॉलिजोपयोगी ग्रंथों का लेखन भी किया है। कई पुस्तक समीक्षाएं लिखी है। अबतक इनकी ४२ किताबें प्रसिध्द हो चुकी हैं। साहित्य के क्षेत्र में उनका योगदान विस्तृत होता जा रहा है।

---

१. सम्पा.डॉ.ब्रम्हदेव मिश्र : "पांडुलिपि" - पृ.५
(सुदेश कुमार - एक और देवेश)

१:१:८ निष्कर्ष :-

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि देवेशजी का सम्पूर्ण जीवन संघर्षमय रहा है। आर्थिक अभावों के कारण हमेशा उन्हें अनेक कठिण संकटो का सामना करना पड़ा। फिर भी वे जूझते हुए उत्साह से जीवन पथ की ओर अग्रसर होते दिखाई देते हैं। इसमें उनकी निरन्तर दृढ़ता तथा अद्‌भुत निर्णयशक्ति का परिचय मिलता है। उनका मध्यवर्गीय जीवन संघर्ष एवं पारिवारिक सन्दर्भ में लिए गये निर्णय ही इसके परिचायक हैं। आज देवेश जो कुछ भी है वह उनके परिश्रम के फलस्वरूप ही है। वे कहते हैं कि "अपनी जिन्दगी तो जीरो से शुरू हुई है। अगर आज दो जोडी कपडे और चार किताबें भी अपने पास हैं तो वह उपलब्धि ही है।"[१]

१.२ व्यक्तित्व :-

डॉ.भानुदेव शुक्लजी ने अपनी पुस्तक "देवेश ठाकुर : प्रश्नों के घेरे में" में प्रथम पृष्ठ पर ही लिखा है,"देवेश ठाकुर के साहित्य में अनवरत संघर्षशीलता तथा भविष्य में आस्था का अटूट स्वर मुखरित हुआ है"[२] इसका प्रमाण उनका "भ्रमभंग" उपन्यास है। चुनौती भरे प्रश्नों से घेरे हुए देवेशजी के व्यक्तित्व के कुछ अंश इस उपन्यास में मिलते हैं। इस प्रकार से यह उनकी आत्मकथा ही तो है। देवेशजी का व्यक्तित्व अत्यन्त विवादास्पद रहा है। उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलु निम्न है -

१:२:१ बाहयपक्ष :-

इसके अंतर्गत वेशभूषा, रंग-रूप दिनचर्या, खान-पान, रहन-सहन आदि का चित्रण किया जाता है। देवेशजी के बाल्य-काल के मित्र सुदेश और दिनेश के कथन में ही देवेशजी के व्यक्तित्व का बाहयपक्ष खुलकर सामने आ जाता है। उनके मतानुसार, वह लम्बा, पतला छरहरा, गेहुआँ-रंग, दुर्बल देह, झुके-झुके कंधे, चेहरे पर अबोधता, घुले-मिले छलकते से बहुत

---

१. डॉ.नन्दलाल यादव : "देवेश ठाकुर : व्यक्ति,समीक्षक और कथाकार"- पृ.सं.२१

२. डॉ.भानुदेव शुक्ल : "देवेश ठाकुर : प्रश्नों के घेरे में" - पृ.सं.१

ही चंचल और शरारती थे। दूसरों की नकल उतारकर खिजानेवाला और आनन्द लेनेवाला है। छोटे कदवाले देवेश के शरीर में सिर्फ हड्डियाँ दिखाई देती थी, फिर भी बचपन में उसे अखाडे का शौक था। आज बिखरे बालों और बढ़ी हुयी श्वेत शाम दाढ़ी से गम्भीर बना हुआ सा उनका चेहरा, होठों के बीच दबा हुआ "पाइप" और आँखों पर मोटे फ्रेम का चश्मा चढ़ा हुआ है। डॉ.चन्दुलाल दुबेजी की दृष्टि से "इन वर्षों में बाकी चीजें वे ही हैं केवल थोडा मुटापा बढ़ गया है।"[१] आज भी देवेशजी दस-बारह घण्टे हरोज लेखन पठन का काम करते हैं।

डॉ.ललित शुक्लजी को देवेश हँसमुख साथी और जिन्दादिल इन्सान लगता है। तो सरजू प्रसाद मिश्र की दृष्टि से, - "देखने में मध्यम कद का गौरवर्णी लघुमानव किन्तु परिश्रम और प्रतिभा में अद्वितीय।"[२] उनके चेहरे पर आत्मविश्वास की चमक, अबोधता और मासुमियत का मिला जुला भाव दिखाई देता है। इसी अपनत्व भाव से पास आनेवाले को अपनासा बना लेते हैं। देवेशजी अपनी सभी अच्छाइयों और बुराइयों को सबके सामने स्पष्ट रूप में व्यक्त करते हैं। यह उनके स्वभाव की सरलता निष्कपटता और ईमानदारी है।

१:२:१:१ <u>वेशभूषा</u> :-

देवेशजी हमेशा खद्दर के कुर्ते-पँट पहनते हैं। लेकिन आजकल उनके पहनावे में कभी-कभी बदलाव भी नजर आता है। कॉलेज के आर्थिक संकटोंवाले दिनों के देवेश के बारे में सुदेशकुमार लिखते हैं,"खासकर मेरे लिए वह देहरादूनवाला वही देवेश है, शरारती, मजाकिया, हँसमुख और बिखरे बालोंवाला वही देवेश - जिसके बदनपर खादी या मलेशिया का कुर्ता पाजामा और पैरों में खडाऊँ हुआ करती थी।"[३] देवेशजी के कुर्ते के कपडे की बुनावट, रंग, काट-छाट, चप्पल आदि के चुनाव में उनकी कलात्मकता दिखाई देती है। वह अनुशासन प्रिय है। उनके स्वभाव में सुरूचि और व्यवस्था प्रियता है।

---

१. प्रा.सतीश पाण्डये : "कथाशिल्पि देवेश ठाकुर" - पृ.१८
(चन्दुलाल दुबे धारवाड)
२. - वही - - वही - (सरजु प्रसाद मिश्र) - पृ.२०
३. सम्पा.डॉ.ब्रम्हदेव मिश्र : "पांडुलिपि" - पृ.११

१:२:१:२ दिनचर्या तथा शौक :-

देवेशजी फर्शपर बैठकर लिखते हैं। एक छोटी-सी तिपाई पर उनकी लेखन सामग्री रखी हुअी होती है। लेखन कार्य में वे देर रात तक और सवेरे आठ तक लगे रहते हैं। उसके बाद अभ्यागतों से मिलते रहते हैं। देवेशजी कहते हैं, "मेरे मित्रों में टॅक्सी ड्राइवर, गेट-कीपर और मिलों में काम करनेवाले मजदूरों से लेकर बडे बँक अधिकारी, उद्योगपति, लेखक, सम्पादक और मिलों के प्रबंधक आदि होते हैं। उनके साथ समय बिताने से मुझे सुख तो मिलता ही है, बहुत सी ऐसी बातें भी जानने को मिलती हैं, जिनकी कल्पना तक कमरे में बैठकर नहीं की सकती।"[१]

देवेशजी को अच्छी-अच्छी चीजें खाने का शौक है। सामिष भोजन तथा "सूप" उन्हें अधिक प्रिय है। "सामिष भोजन के बाद "सूप" मेरी दूसरी पसंद होगी। केला और चीकू मेरे मनपसन्द फल है।"[२] पाइप पीना और पान खाना उन्हें अच्छा लगता था लेकिन सेहत के कारण आजकल वे पाइप नहीं पीते। इन्हें मँहगी से मँहगी चीजे खरीदने का शौक है। पुस्तकें तथा पत्रिकाएँ खरीदते हैं। सागर किनारे घूमना, पौधे लगाना, लव बर्डस् पालना, संगीत सुनते रहना और खासकर कमरे में अंधेरा करके लाइट म्युजिक के कॅसेट सुनने का आनंद वे कुछ और ही मानते हैं। अवकाश के दिनों में पहाडों पर जाना, यात्राएँ करना, सडकों पर घूमना इन्हें अच्छा लगता है।

१:२:२ आंतरिक पक्ष :-

व्यक्तित्व के आंतरिक पक्ष में व्यक्ति के गुण, स्वभाव, रूचि, प्रतिभा, मानसिक क्रियाकलाप आदि का अध्ययन किया जाता है।

१:२:२:१ स्वाभिमानी वृत्ति :-

देवेशजी ईमानदार एवं स्वाभिमानी वृत्ति के हैं। उनके बारे में जितेन्द्रसिंह लिखते हैं

---

१. डॉ.भानुदेव शुक्ल : देवेश ठाकुर : प्रश्नों के घेरे में - पृ.२७
२. - वही - - वही - पृ.२३

"देवेश सचमुच बहुत अतिवादी हैं। प्यार करने में भी और घृणा करने में भी, प्यार करेगा तो अपना सबकुछ लुटा देगा, घृणा करेगा तो भी पूरी शिद्दत और ईमानदारी के साथ करेगा। गलत या झूठ उससे सहा नहीं जाता। उसने इसके लिए अपने परिवार वालोंतक को नहीं बख्शा और एक बार सम्बन्ध तोड़ दिया तो फिर लौटकर उनकी तरफ नहीं देखा।"[१] देवेश की स्वाभिमानी वृत्ति के बारे में डॉ.इन्दुबाली ने कहा है कि, "अपना ही नहीं दूसरों का दुःख सहने की भी उसमें अपार क्षमता है। अपनी दयनीयता का रोना वह कभी नहीं रोया। देवश हर कण में स्वभिमानी है।"[२]

अपनी ईमानदारी के कारण ही देवेशजी अपनी कमजोरियों को भी स्वीकार करते हैं। वे अपने साथ औरों को भी ईमानदार देखना चाहते हैं। डॉ.त्रिभुवनराय का कहना है - "वह अपनी ईमानदारी के तहत औरों से भी ईमानदार होने की अपेक्षा करता है। परन्तु आज का व्यावहारिक व्यक्ति परिश्रम की तुलना में "शार्टकट" का मार्ग ज्यादा पसंद करता है।"[३]

१:२:२:२ संघर्षशील :-

देवेशजी बहुत ही संघर्षशील एवं परिश्रमी व्यक्ति है। उनकी दिनचर्या व्यस्तता में ही बितती है। वे किसी भी काम को छेटा नहीं मानते। इसलिए इन्होंने अपने अर्थिक संकट के कठिण दिनों में होटल में जूठी प्लेटे धोई, साईकिल स्टैंड पर काम किया। उनकी धुन, संघर्षशीलता, और कार्यक्षमता विशिष्ठ है। देवेशजी हमेशा ध्येय प्राप्ति के प्रति सजग रहते हैं। अर्थाभाव, परिवेश, और परिस्थितियों के साथ इन्हें हमेशा संघर्ष करना पडा है। उनके मित्र जितेन्द्रसिंह ने लिखा है - "लगता है संघर्ष करना और करते जाना उसकी नियति में है। लेकिन इस बात का ऊज्वल पक्ष यह है कि उसे संघर्ष में अन्ततः सफलता मिली हैं। और इसका श्रेय उसकी मेहनत, आत्मविश्वास और ईमानदारी को जाता है।"[४]

---

१. सम्पा.डॉ.ब्रम्हदेव मिश्र : "पांडुलिपि" - पृ.३८
(जितेन्द्र सिंह : मित्रों के जंगल में एक वृक्ष देवदारू का)

२. डॉ.सतीश पाण्डये : "कथाशिल्पि : देवेश ठाकुर" - पृ.२५
(डॉ.इन्दुबाली,चंदीगढ)

३. - वही - - वही- - पृ.१५
(डॉ.त्रिभुवनराय,बम्बई)

४. सम्पा.नन्दलाल यादव : "देवेश ठाकुर : व्यक्ति,समीक्षक और कथाकार" - पृ.२७

१:२:२:३ सरलता :-

देवेशजी की सादगी तथा सरलता के बारे में डॉ.इन्दुबाली कहती हैं,"देवेश मुझे जब भी मिला सीधा, सरल, निश्चल और भावुक लगा। लेकिन उसके हृदय पर हर बात की प्रतिक्रिया सामान्य न होकर तीव्र होती है।"[१] इसी कारण कहा जा सकता है कि देवेश साधे, सरल, निश्चल और भावुक व्यक्ति हैं। अपनी इसी प्रकार की सरलता के कारण वे थोडे से स्नेह और थोडीसी सदाशयता पर बेमोल बिक जाते हैं। अथवा अतिशय उदार हो जाते हैं। अपने विरोधियों के पीछे हाथ धोकर पडते हैं। किसी दुःखद घटना की प्रतिक्रिया उनपर बहुत तीव्र होती है। देवेश भावुक होने के कारण बात करते करते उनकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। वे स्वयं को घमंडी नहीं मानते। उनके साथ किसी भी विषय पर संवाद किया जा सकता है। इसप्रकार देवेश का अंतर सीधा, सरल, स्पष्ट तथा संवेदनशील है।

१:२:२:४ स्पष्टवादी और फक्कड़ :-

कबीर की तरह देवेश फक्कड़ होने के साथ स्पष्टवादी भी है। इसीकारण लोग या तो उनके मित्र होते हैं या दुश्मन। वे मध्यमवर्गी कभी नहीं रहे। विश्वनाथजी का कहना हैं,- "देवेश जो देखते हैं, सोचते हैं उसे उसी रूप में कह देते हैं। इस अक्खडता के बावजूद वह अत्यन्त व्यावहारिक है।"[२] देवेश किसी का उदार रखना नहीं चाहते "इस हाथ दे उस हाथ ले" वाली उनकी नीति हैं। अपनी स्पष्टवादिता के बारे में उनका कहना है, "मेरी स्पष्टवादिता को लोग चाहे अतिवादी माने या उच्छृंखलता, मुझे चिंता नहीं। मैं लोगों को उनके उचित स्थान का अहसास करा देता हूँ। उनका भला ही तो करता हूँ "निन्दक नियरे राखिएं" - कबीर ने ही कहा है। मैं मुँह से नीम लिए पैदा हुआ हूँ जो कड़वा लगता है, पर है हितकारी।"[३]

---

१. प्रा.सतीश पाण्डये : "कथाशिल्पि : देवेश ठाकुर" - पृ.२४

२. - वही - - वही - - पृ.१३
(विश्वनाथ (नवभारत टाइम्स) बम्बई)

३. सम्पा.डॉ.ब्रम्हदेव मिश्र : "पांडुलिपि" - पृ.१८
(देवेश मेरा सहयोगी और सहभोगी - दिनेश कुकरेती)

देवेश में कबीर जैसी अक्खड़ता और फक्कड़पन हैं वे स्वयं कहते हैं, "मैं सीधा-सादा अक्खड़, पहाडी आदमी हूँ और चारित्रिक विसंगतियों और मुखौटेबाजी से घृणा करता हूँ।"[१]

१:२:२:५ दृढ़निश्चयी :-

देवेशजी, दृढ़निश्चयी, आस्थावान तथा संयमी व्यक्ति है। महत्त्वाकांक्षी और आत्मविश्वासी भी है डॉ.इन्दुबाली का कथन है - "सागर मन्थन के बाद निकला था विष और वह पीकर शंकर हो गए थे शिव। वैसे ही मुझे लगता है जीवन की कटुताओं और विषमताओं का विष पीते पीते देवेश शिव हो गया है।"[२]

देवेशजी दृढ़-निश्चयी है। प्राध्यापक बनने का उनका निश्चय दृढ़ रहा। उन्होंने अपने नाम को साहित्य में अमर करने का निश्चय किया था और आज वे एक श्रेष्ठ उपन्यासकार तथा प्रगतिशील समीक्षक के रूप में प्रसिध्द हैं।

१:२:२:६ निर्णयक्षमता :-

देवेशजी में निर्णयक्षमता आसाधारण रूप में मिलती है। उन्होंने हर प्रसंग में जोखिम उठाकर अपनी सही निर्णयक्षमता का परिचय दिया है। घरवालों की टुच्ची मनोवृत्ति से त्रस्त होने पर देवेश को दिल का दौरा पड़ा तब अपने "स्व" की रक्षा तथा अपने बच्चों की भलाई की दृष्टि से परिवार से उन्होंने सम्बन्धविच्छेद करने का निर्णय लिया। "भ्रमभंग" की भूमिका में अपनी ओर से उन्होंने लिखा है - "एक क्षण आता है देवेश जब निर्णय लेना ही होता है। चाहे वह कितना भी कठिन क्यों न हो। असमंजस के बीच जीवन नहीं जिया जाता।"[३]

---

१. सम्पा.डॉ.नन्दलाल यादव : "देवेश ठाकुर : व्यक्ति,समीक्षक और कथाकार" - पृ.३५
(रतिलाल शाहीन : "साहित्यिक दृष्टि और भ्रमभंग के दंश)

२. प्रा.सतीश पाण्डये : "कथाशिल्पि देवेश ठाकुर" - पृ.२३
(डॉ.इन्दुबाली,चंदीगढ)

३. डॉ.देवेश ठाकुर : "भ्रमभंग" - पृ.७

१:२:२:७ सच्चा मित्र :-

दोस्ती में देवेशजी का दृष्टिकोण उदार है लेन-देन वाली दोस्ती वे पसंद नहीं करते। वे अपने मित्रों पर प्राण न्योच्छावर करने के लिए भी तयार रहते हैं। उनके सभी दोस्त भी ऐसे ही हैं। पढ़ाई के दिनों में उनके मित्रों ने उनकी अनेक प्रकार से सहायता की है। इसीकारण वे अपने मित्रों के बारे में कहते है,- "एक ओर इसतरह के छोटे-छोटे अभाव थे और दूसरी ओर सहयोगी मित्रों की लम्बी कतार थी, जो बहुत ईमानदार सच्चे और संवेदनशील थे।"[१] स्टुडंट कौन्सिल के चुनाव में दिनेश के लिए देवेश सबेरे पाँच बजे से रात्रि के एक बजे तक भूखे-नंगे रहकर प्रचार करते फिरते थे। डॉ.कमल किशोर गोयनका को देवेश के साथ अपनी दोस्ती पर गर्व है। देवेशजी किसी को दोस्त बनाते हैं तो पुरी ईमानदारी के साथ। इसप्रकार देवेश एक सच्चा एवं जिंदादिल दोस्त है।

१:२:२:८ व्यवस्थाप्रिय :-

देवेश सुरूचिपूर्ण एवं व्यवस्था-प्रिय व्यक्ति हैं। पुस्तकों को वे अपनी "अमूल्य संपत्ति" मानते हैं। इसी कारण पुस्तकों को ड्राईंग रूम, सोने के कमरे तथा बाहर बाल्कनी में भी सुव्यवस्थित "ढंग" से रखते हैं। स्वभाव से अनुशासनप्रिय होने के कारण, पुस्तकों पर पर्याप्त पैसा खर्च कर उन्हें कलात्मकता के साथ सम्भालकर रखते हैं। नयी और पुरानी पत्र-पत्रिकाएँ यथास्थान होती है। लिखे जा रहे लेखों के पृष्ठ तथा पाण्डुलिपियाँ लाल-निले हरे पेन, पैंसिलों की पंक्तियाँ, पत्रव्यवहार, लोगों के पत्ते फोन नंबर सब अक्षर क्रम से डायरी में नोट किए हुए मेजपर मिलते हैं और जरूरत के समय आसानी से पाये जा सकते है। देवेशजी की धर्मपत्नी सुशीला ठाकुरजी का कहना है कि, "देबू बाहर से बहुत फक्कड़ (अब मैं फक्कड़ का अर्थ समझ गयी हूँ।) लापरवाह और जिन्दादिल दिखाई पडते हैं। लेकिन भीतर वे उतने ही गंभीर व्यक्तित्व और अनुशासन प्रिय है।"[२]

---

१. डॉ.भानुदेव शुक्ल : देवेश ठाकुर : प्रश्नों के घेरे में - पृ.२९

२. सम्पा. डॉ.ब्रम्हदेव मिश्र : "पाण्डुलिपि" - पृ.४९
(सुशीला ठाकुर : देबू : एक बिगड़ैल पति लेकिन जिम्मेदार गृहस्थ)

१:२:२:९ निष्कर्ष :-

डॉ.देवेश ठाकुर के जीवन चरित तथा परिवेश के बाहय तथा आंतरिक पक्ष का अध्ययन करने के उपरान्त निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उनका सम्पूर्ण जीवन आर्थिक कठिनाइयों से सामना करने में बीत गया है। संघर्ष उनकी रग-रग में समाया है। संघर्षों में भी उनमें असाधारण निर्णयक्षमता का परिचय मिलता है। वे एक आदर्श तथा संपन्न व्यक्तित्व के धनी हैं। उनके व्यक्तित्व के अध्ययन से पाठकों को जीवन के संघर्ष पथ पर ईमानदारी के साथ अथक परिश्रम करने की प्रेरणा मिल जाती है। आज जो कुछ भी उनके पास उपलब्ध हैं वह उनकी ईमानदारी और परिश्रम का ही फल हैं। वे प्रतिभा की अपेक्षा "अभ्यास" को अधिक महत्व देते हैं। समाज को रचनात्मक रूप में कुछ देने की महत्त्वाकांक्षा ने ही इन्हें कठोर परिश्रमी बनाया हैं।

सच्चाई को खुले रूप में कहने की आदत ही उनके व्यक्तित्व का एक गुण हैं। देवेश स्पष्टवादी होने के कारण अनेक लोग उनके शत्रु बने हैं। वे सीधे-सादे, सरल-भावुक तथा हँसमुख व्यक्ति हैं। वे संवेदनशील, दृढ़निश्चयी, महत्त्वाकांक्षी तथा संघर्षशील है। स्पष्टता, ईमानदारी, स्वाभिमान और फक्कड़ता उनके असाधारण व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि उनका यह व्यक्तित्व नई पीढ़ी के लिए आदर्श एवं प्रेरणादायी रहेगा।

१.३ कृतित्व :-

डॉ.देवेश ठाकुर ने अपनी किशोरावस्था से जो लेखन कार्य शुरू किया था उसका विस्तृत रूप आज हमें देखने को मिलता है। हिन्दी साहित्य जगत में रचनाधर्मी, प्रयोगशील साहित्यिक और प्रगतिशील समीक्षक के रूप में इनका विशेष स्थान है। अपनी साहित्य रचना के कार्य में साहित्य गुरू के रूप में वे कहते हैं,- "मेरे अनुभव मेरे साहित्यिक गुरू हैं। वैसे गंभीर अध्ययन करने की प्रेरणा मुझे आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी से तब मिली जब मैं उनके निर्देशन में पीएच.डी. के लिए शोधकार्य कर रहा था। वहीं डॉ.भानुदेव शुक्ल और डॉ.प्रेमशंकर ने मुझे लिखने-पढ़ने की प्रेरणा दी। उपरान्त डॉ.भगीरथ मिश्र के निर्देशन में डी.लिट् के लिए अध्ययन करते हुए मुझे व्यवस्थित रूप से अध्ययन करने की दिशा

मिली। वैसे मैं यद्यपि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कभी विद्यार्थी नहीं रहा लेकिन उनके लेखन व चिंतन में मैंने हमेशा अपने भावों की प्रतिछाया देखी है। यदि मुझे किसी को अपना साहित्यिक गुरू कहना ही पड़े तो मैं उसके लिए आ.हजारी प्रसाद द्विवेदीजी का नाम ही लेना चाहूँगा यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से मैं उनका विद्यार्थी कभी नहीं रहा।"[१]

साहित्यकार अथक परिश्रम, प्रयास और अनवरत साधना से ही अभिव्यक्ति की कलात्मक उँचाई तक पहुँचता है। बचपन से ही अथक परिश्रमों के बावजुद भी देवेशजी को अपने लेखन कार्य के दौरान अनेक तिक्त मधुर प्रसंगों से गुजरना पड़ा है। देवेशजी के साहित्यिक कृतित्व के अन्तर्गत "उपन्यास, काव्य, कहानी, बालसाहित्य, निबन्ध, शोध समीक्षा आदि आते हैं। जिसका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है -

१:३:१ **एकांकी :**

"इन्सान की मौत"

१:३:२ **प्रथम लघु-उपन्यास :** "चमकीले पत्थर"

१:३:३ **कविता-संग्रह :**

१. मयूरिका

२. अन्तरछाया

३. अवकाश के क्षणों में

१:३:४ **बाल-साहित्य :**

१. ममता (उपन्यास)

२. दो सहेलियाँ (कहानियाँ)

१:३:५ **कॉलेजोपयोगी साहित्य :**

१. कॉलेज निबन्ध और रचना।

२. हिन्दी निबन्ध प्रदीप।

३. व्यवहार वीथिका। (पत्राचार)

---

१. सम्पा.नन्दलाल यादव : "देवेश ठाकुर : व्यक्ति,समीक्षक और कथाकार" पृ.४९
(रतिलाल शाहीन : साहित्यिक दृष्टि और "भ्रमभंग" के दंश।)

१:३:६ **कहानी संग्रह :** "सिर्फ संवाद"

१:३:६:१ "पहली शाम।"

१:३:६:२ "सम्बन्ध।"

१:३:६:३ "अब यह भी नही।"

१:३:६:४ "कहानी नहीं।"

१:३:६:५ "सिर्फ संवाद।"

१:३:६:६ "पैंट।"

१:३:६:७ "और सून।"

१:३:६:८ "सोच।"

१:३:६:९ "बेगानी शादी में।"

१:३:६:१० "सिलसिला।"

१:३:६:११ "बुध्दिजीवी।"

१:३:६:१२ "रिश्ते।"

१:३:७ **उपन्यास :**

	उपन्यास	प्रकाशन काल	प्रकाशन
१:३:७:१	प्रमभंग	१९७५ ई.	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,दिल्ली
१:३:७:२	प्रिय शबनम	१९७८ ई.	पराग प्रकाशन,दिल्ली
१:३:७:३	काँचघर	१९८१ ई.	मीनाक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली
१:३:७:४	इसीलिए	१९८४ ई.	देवदार प्रकाशन, दिल्ली
१:३:७:५	अपना अपना आकाश	१९८४ ई.	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
१:३:७:६	जनगाथा	१९८६ ई.	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
१:३:७:७	गुरूकुल	१९८९ ई.	संकल्प प्रकाशन, बम्बई
१:३:७:८	शून्य से शिखर तक	१९९१ ई.	संकल्प प्रकाशन, बम्बई
१:३:७:९	अन्ततः	१९९२ ई.	संकल्प प्रकाशन, बम्बई
१:३:७:१०	शिखर पुरूष	१९९५ ई.	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

१:३:८ **शोध और समीक्षा :**

डॉ.देवेश ठाकुर प्रयोगशील कथाकार के साथ-साथ प्रगतिशील प्रखर समीक्षक के रूप में भी प्रसिध्द है।

१:३:८:१ **शोध :**

१. प्रसाद के नारी पात्र।

२. आधुनिक हिन्दी साहित्य की मानवतावादी भूमिकाएँ।

३. हिन्दी की पहली कहानी।

१:३:८:२ **समीक्षा :**

१. नयी कविता के सात अध्याय।

२. "नदी के द्वीप" की रचना-प्रक्रिया।

३. "मैला आँचल" की रचना-प्रक्रिया।

४. "हिन्दी कहानी का विकास"।

५. साहित्य के मूल्य।

६. साहित्य की सामाजिक भूमिका।

७. आलेख।

१:३:९ **संपादन कार्य :-**

डॉ.देवेश ठाकुर प्रख्यात कथाकार और मूर्धन्य आलोचक के साथ साथ एक सफल संपादक भी है। सम्पादन कर्म उनकी हॉबी है।

देवेशजी के कथाक्रम भाग-१ (स्वाधिनता के पहले की कहानियाँ) और कथाक्रम भाग-२ (स्वाधिनता के बाद की कहानियाँ) में क्रमशः १०७ तथा ६८ कहानियाँ संकलित की गयी है। दोनों कथाक्रमों की भूमिकाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनका यह योगदान सराहनीय है। कथावर्ष - १९७६, १९७७, १९७८, १९७९, १९८०, १९८१, १९८२ तथा १९८३ के रूप में उनके ८ संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। समीचीन कथा-वर्ष १९९३, रचना प्रक्रिया

और रचनाकार, हिन्दी की पहली कहानी, प्रेमचंद साहित्य के अध्येता : डॉ.कमल किशोर गोयनका तथा देवेश ठाकुर रचनावली - १ से ७ खण्ड भी सम्पादित हो चुके हैं। देवेशजी के संपादन कार्य के बारे में पाटीलजी कहते हैं - "देवेशजी के गतिशील चरण, अनेक पडावों को पीछे छोडते हुए अपने गन्तव्य की ओर तेजी से अग्रेसर है।"[१] देवेशजी की संकल्प शक्ति, अध्ययन और अनुशीलन ने उन्हें हिन्दी का एक सफल एवं महत्वपूर्ण समीक्षक बना दिया है।

१:३:१० निष्कर्ष :-

यदि देवेशजी की कृतियों पर दृष्टि डाली जाय तो निःसन्देह कहा जा सकता है कि, हिन्दी साहित्य जगत् को जो कुछ भी दिया है वह महान ही नहीं, महत्तम भी है। १९४९ ई.से अबतक हिन्दी साहित्य के भंडार में ४३ कृतियों का योग दिया हैं। इसके पीछे उनके अथक परिश्रम ही तो हैं। यातनाओं से भरे प्रारंभिक जीवन में अस्तित्व को बनाये रखने के लिए देवेश ने क्या क्या मुसीबतें नहीं झेली। छोटी-मोटी अनेक प्रकारकी नौकरियाँ करते हुए उन्होंने अपने लेखन कार्य को जारी रखा। अब तक देवेशजी की प्रतिभा बहुमुखी बन गयी है। साहित्य की जिन-जिन विधाओं को अपना योगदान दिया वहाँ वे सफल रहे हैं। इसमें भी उनकी प्रतिभा उपन्यास की विधा में अधिक प्रखर हुई। देवेशजी के रचनाकार मित्रों के सहयोग और प्रेरणा से उनकी रचनाओं को तथा प्रथम उपन्यास "प्रमभंग" के ज्ञानपीठ प्रकाशन द्वारा प्रकाशित होते ही उन्हे दृष्टिसंपन्न कथाकार के रूप में साहित्य जगत् में ख्याति प्राप्त हुई।

देवेशजी का जीवन और साहित्य विषयक दृष्टिकोण प्रगतिशील रहा है। उनकी रचनाधर्मिता मूल रूप से मानववादी मूल्यों से प्रेरित हैं। व्यवस्था में व्याप्त, विसंगतियों, विद्रुपताओं और भ्रष्ट नेतृत्वपर सभी रचनाओं में तीखे व्यंग्य कसे हैं। उनका साहित्य एवं समीक्षा संम्बन्धी दृष्टिकोण का अध्ययन करने से निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि वे मार्क्सवाद तथा कम्युनिज्म से ज्यादा मानववादी है।

---

१. डॉ.पी.एस.पाटील : "देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य" - पृ.२४